

ॐ

## राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, बंगलूरु

फाल्गुन शु. 7-9, युगाब्द 5115

(7-9 मार्च 2014)

के अवसर पर

सरकार्यवाह श्री सुरेश (भय्या) जी जोशी

द्वारा प्रस्तुत

## वार्षिक प्रतिवेदन

(2013-2014)

(फाल्गुन शु. 7, युगाब्द 5115, दि. 7 मार्च 2014)

विकास तेलंग

प्रधान कार्यालय सचिव

डॉ. हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर - 440 032

दूरभाष : (0712) 2723003, 2720150

Website : [www.rss.org](http://www.rss.org)

E-mail : [hedgewarbhavan@rediffmail.com](mailto:hedgewarbhavan@rediffmail.com)

कृपया 7 मार्च 2014 दोप. 12.00 बजे से पूर्व प्रकाशित न करे

## ॥ ॐ ॥

प. पू. सरसंघचालक जी, आदरणीय अखिल भारतीय पदाधिकारी गण, अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल के सदस्य, क्षेत्रों एवम् प्रान्तों के मान्यवर संघचालक तथा कार्यवाह बंधुगण, अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा के सदस्य गण तथा सामाजिक जीवन के विविध कार्यों का दायित्व निर्वहन करने वाले निमंत्रित बहनों तथा भाईयों, युगाब्द 5115 (मार्च 2014) में बंगलूरु में संपन्न हो रही इस अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में आप सभी का हृदय की गहरा से स्वागत है।

### श्रद्धांजलि :

सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए, अपना कर्तृत्व समर्पित करते हुए सामाजिक परिवर्तन के कार्य को गति प्रदान की और अपना नश्वर देह त्यागकर हमसे बिछुड़ गये ऐसे महानुभावों की अनुपस्थिति हमें सदा के लिये पीड़ा की अनुभूति देती रहेगी। ऐसे सभी का स्मरण होना स्वाभाविक ही है।

संघकार्य के प्रति प्रतिबद्धता एवं विचारों के प्रति संपूर्ण समर्पण इस कल्पना को जिनके जीवन में चरितार्थ हुए देखा जा सकता है ऐसे पश्चिम क्षेत्र के पूर्व कार्यवाह श्री विलास जी फडणवीस शारीरिक कष्ट से संघर्ष करते हुए अपनी अंतिम यात्रा की ओर प्रस्थान कर गये। पंजाब में गौ सेवा के कार्य में लगे रहे, ऐसे श्री राजाराम जी अकस्मात ही हृदयघात से काल के ग्रास बन गये। अपनी बेबाक स्पष्टता के लिये जाने जाते रहे, ऐसे पूर्व सांसद एवं पत्रकार श्री दीनानाथ जी मिश्रा हमसे बिछुड़ गये। मा. शिवकुमार जी भरतीया, चंपारण विभाग के सह संघचालक, तृतीय वर्ष हेतु नागपुर आये लेकिन वर्ग पुरा नहीं कर पाये, मध्य में ही स्वर्गगमन कर गये। हावडा दक्षिण भाग के संघचालक मा. अरुणदा चक्रवर्ती, सवाई माधोपुर के सह विभाग संघचालक डॉ. हरिचरण जी शर्मा, काशी प्रांत के वरिष्ठ प्रचारक

गुर्जनसिंग ठाकुर, अमृतसर जिले के माननीय संघचालक श्री संतोक सिंह जी, विवेकानंद शीला स्मारक समिति के प्रारंभिक कार्य में कार्यालय का दायित्व संभालने वाले व बाद में चेन्नई कार्यालय में वानप्रस्थी बनकर कार्यालय प्रमुख के नाते कार्यरत श्री आर्. एन्. वेंकटरामन् जी, कर्णावती के पूर्व भाग संघचालक श्री माणेकलाल जी पटेल भी आज हमारे मध्य नहीं है। तन-मन-धन समर्पण की प्रतिज्ञा जिन्होंने अपने जीवन में साधक की, विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया, विशेषतः विश्व हिंदु परिषद के कार्य को महाराष्ट्र प्रांत में सशक्त किया, ऐसे पुणे के श्री अरविंदराव हर्षे कर्करोग से संघर्ष करते हुए प्रस्थान कर गये। वानप्रस्थी इस नाते संपूर्ण समय भारतीय मजदूर संघ का कार्य देखने वाले, केरल के अलुवा निवासी श्री पी. टी. राव, संपूर्ण आंध्रप्रदेश के वनवासी आवास प्रमुख हैदराबाद निवासी श्री के.एस्.मूर्ति जी, हैदराबाद के भारत विकास परिषद के क्षेत्र कार्यदर्शी श्री जी. प्रभाकर जी भी आज अपने मध्य नहीं रहे ।

अपनी लेखनी से समाज को विशेषतः वंचित समाज के बंधुओं की वेदनाओं को जिन्होंने मुखर किया, ऐसे महाराष्ट्र के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री नामदेव जी ढसाळ तथा दिल्ली के श्री राजेन्द्र यादव जी, अपनी दानशूरता के लिये जाने जाते है, ऐसे मुंबई के उद्योगपती श्री दीपचंद जी गार्डी, विश्व हिंदु परिषद के कार्य में जिनका महत्वपूर्ण योगदान रहा और हिन्दुत्व विचारों के प्रखर पुरोधा मैसूर महाराजा श्री श्रीकंठदत्त नरसिंहराज वाडीयर जी, उसी प्रकार त्रावणकोर के महाराजा श्री उत्तारदीन तिरुमल मार्तड वर्मा जी, मैसूर निवासी संस्कृत विद्वान महामहोपाध्याय श्री एन. रंगनाथ शर्मा जी, हिन्दु महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विक्रम जी सावरकर एवं बेंगलूर निवासी 'राष्ट्रकवि' बिरुद से सम्मानित कन्नड कवि डा. जी. एस्. शिवरुद्रप्पा जी ऐसे श्रेष्ठ महानुभाव दिवंगत हो गये।

मध्यप्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष श्री ईश्वरदास जी रोहाणी, छत्तीसगढ से भा.ज.पा. सांसद श्री मुरालीलाल जी, राजस्थान से केन्द्रिय मंत्री रहे श्री शीशराम जी ओला, पूर्व सांसद एवं भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बंगारु लक्ष्मण जी परलोक सिधार गये। पद्मश्री से सम्मानित नागपुर के डॉ. विक्रम जी मारवाह व

राजस्थान के साहित्यकार श्री विजयदान जी देथा (बिज्जी), सिने कलाकार श्रीमती सुचित्रा सेन व ए. नागेश्वर राव, दक्षिण आफ्रिका के श्री नेल्सन मंडेला जी, दाऊदी बोहरा समाज के धर्मगुरु श्री सैयदना मुफदल सफुउद्दीन जी यह सभी महानुभाव अपने सामाजिक योगदान के लिये सदा ही स्मृति में बने रहेंगे।

अपने आध्यात्मिक चिंतन से और मधुर वाणी द्वारा विचार, व्यवहार को दिशा प्रदान करने का सामर्थ्य रखने वाले पू. कृपालु महाराज जी वैकुण्ठगमन कर गये। उत्तराखंड की प्राकृतिक आपदा में देश के विभिन्न प्रांतों से आये हजारों श्रद्धालु, तीर्थयात्री अपने प्रियजनों के मध्य वापस नहीं पहुँच पाए और स्वर्ग की यात्रा पर प्रस्थान कर गये।

विभिन्न दुर्घटनाओं में, आतंकी हमलों के शिकार बन गये, ऐसे सभी बंधुओं के प्रति हम श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं तथा उनके समस्त परिवार जनों के प्रति अपनी शोक संवेदना प्रगट करते हैं। ईश्वर ऐसे सभी महानुभावों को सद्गति प्रदान करें।

## **कार्यस्थिति :**

गत वर्ष 2013-14 में देशभर में प्रथम वर्ष सामान्य के 48 वर्ग, प्रथम वर्ष विशेष के 6 वर्ग, द्वितीय वर्ष के 12 वर्ग एवं तृतीय वर्ष के सामान्य व विशेष ऐसे दो वर्ग मिलाकर कुल 68 संघ शिक्षा वर्ग संपन्न हुए। प्रथम वर्ष सामान्य में 6759 स्थानों से 10435 शिक्षार्थी, प्रथम वर्ष विशेष में 286 स्थानों से 386 शिक्षार्थी, द्वितीय वर्ष में 1825 स्थानों से 2231 शिक्षार्थी तथा तृतीय वर्ष सामान्य के प्रशिक्षण हेतु 565 स्थानों से 607 शिक्षार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। तृतीय वर्ष विशेष में 360 शिक्षार्थी सहभागी हुए। इस वर्ष सामान्य वर्गों के साथ द्वितीय वर्ष विशेष के वर्ग भी चार-पाँच स्थानों पर होंगे।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार वर्तमान में देश में 29,624 स्थानों पर 44,982 शाखाएँ चल रही हैं। 10,146 स्थानों पर साप्ताहिक मिलन तथा 7387 स्थानों पर संघ मंडली के रूप में कार्य चल रहा है।

## कार्य विभाग वृत्त :

### 1. शारीरिक विभाग :

गत वर्ष के समान इस वर्ष भी 16 दिसंबर को प्रहार महायज्ञ का आयोजन किया गया। 19096 शाखाओं में 2,08,386 स्वयंसेवक सहभागी हुए जिन्होंने कुल 8 करोड़ 28 लाख 30 हजार 122 प्रहार लगाये। गत वर्ष की तुलना में लगभग 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2/3 स्वयंसेवक 45 वर्ष से कम आयु के थे। एक हजार से अधिक प्रहार लगाने वालों की संख्या 37006 है जो गत वर्ष से दो गुना ज्यादा है।

### घोष :

2013-14 में 30 प्रांतों में प्रांत स्तर पर घोष प्रशिक्षण वर्गों का आयोजन हुआ, जिसमें 4792 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। विशेषतः 11 प्रांतों में श्रृंग वाद्य प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें 477 शिक्षार्थी उपस्थित रहे।

बंगलूरु महानगर में घोष वादक संचलन एवं सामूहिक वादन का कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें 1072 तरुण सम्मिलित हुए। वैसा ही आयोजन चित्तौड़ प्रांत में हुआ। प्रांत में 42 स्थानों पर एक ही समय संचलन निकले जिसमें 1036 स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया।

दिल्ली प्रांत में “इंद्रप्रस्थ नाद” और चित्तौड़ प्रांत में “स्वर निनाद” यह 4 दिवसीय घोष शिविर संपन्न हुए। दिल्ली प्रांत में 807 एवं चित्तौड़ प्रांत में 594 स्वयंसेवक इस शिविर में सहभागी हुए।

### 2. बौद्धिक विभाग :

#### कथाकथन प्रशिक्षण वर्ग :

अखिल भारतीय स्तर पर द्वि दिवसीय ‘दीर्घकथा कथन कार्यशाला’ का आयोजन झांसी में किया गया। जिसमें 30 प्रांतों से 58 कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सिद्धता,

प्रस्तुती इ. दृष्टि से प्रशिक्षण प्रभावी रहा। शाखाओं पर दीर्घकथा कथाकथन के कार्यक्रमों में वृद्धि हो रही है।

### **प्रार्थना सप्ताह :**

16 से 23 फरवरी 'प्रार्थना सप्ताह' की योजना बनाई गई थी; स्वयंसेवकों हेतु 'प्रार्थना' पर बौद्धिक वर्ग हो, ऐसी योजना थी। देशभर में 20,192 शाखाओं में कार्यक्रम हुए जिसमें 2 लाख 90 हजार 334 स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। सभी प्रांतों में इस निमित्त से वक्ता प्रशिक्षण का सफल प्रयास रहा है।

### **3. प्रचार विभाग :**

प्रचार विभाग के द्वारा इस वर्ष कोलकाता, दिल्ली, बंगलूरु और कर्णावती ऐसे 4 स्थानों पर स्तंभ लेखकों की संगोष्ठी के कार्यक्रम हुए। इस्लाम समस्या का स्वरूप, अनुसूचित समाज में प्रचलित विभिन्न प्रवाह, जम्मू कश्मीर के बदलते परिप्रेक्ष्य तथा भारत के विकास की दिशा ऐसे चार विषयों पर इन संगोष्ठियों में विचार विमर्श हुआ जिस में देशभर से 220 स्तंभ लेखक सहभागी हुए थे।

जॉईन आर. एस. एस. के माध्यम से शिक्षित युवकों का संघ से जुड़ने का लगातार बढ़ता प्रमाण देख कर इस हेतु सभी स्तरों पर योग्य कार्यकर्ता नियुक्त हो ऐसा प्रयास हो रहा है। वर्ष 2012 में इस माध्यम से जुड़ने वालों की संख्या 12118 थी। 2013 में यह संख्या बढ़कर 31102 हुई है।

### **4. प्रचारक विभाग :**

इस वर्ष तीन विशेष संमेलनों का आयोजन किया था।

- (1) दिनांक 11 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2013 तक दायित्वमुक्त ऐसे सभी ज्येष्ठ प्रचारकों का संमेलन विजयादशमी के पावन अवसर पर स्मृतिभवन, रेशिमबाग, नागपुर में आयोजित किया गया था। 124 में से 85 प्रचारक इसमें उपस्थित रहे। धर्मजागरण, गौ सेवा, सेवा विभाग एवं परिवार प्रबोधन इन

विषयों पर सामूहिक चिंतन हुआ। पू. सरसंघचालक जी, मा. सरकार्यवाह जी एवं श्री रंगा हरि जी के साथ अनौपचारिक वार्तालाप प्रेरणादायी रहा। नागपुर के विजयादशमी कार्यक्रम में सभी उपस्थित रहे। अधिकांश प्रचारकोने पहली बार नागपुर के उत्सव में भाग लिया। विजयादशमी के दिन सायं सोना देने का कार्यक्रम सभी को अच्छा लगा। कुछ कार्यकर्ताओं का नागपुर के स्वयंसेवकों ने साक्षात्कार भी लिया। कार्यक्रम के आयोजन व व्यवस्था से सभी आनंदित थे।

- (2) दिनांक 21 जनवरी से 23 जनवरी तक स्मृतिभवन, रेशिमबाग में पूर्व प्रचारक थे, किंतु आज संन्यासी, मठाधीश है ऐसे संतों का संमेलन आयोजित किया था। 85 की सूची में से 48 संतों की उपस्थिति थी। संमेलन में सामाजिक समरसता, परिवार प्रबोधन, धर्मजागरण एवं संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार संबंधित विषयों पर चर्चा हुई। उपरोक्त सारे विषयों के महत्व को ध्यान में रखकर अन्याय संतों तथा अपने-अपने अनुयायी वर्ग को इसे बताकर उन्हें इस सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में सहभागी बनाने का सभी ने निश्चय किया। पू. सरसंघचालक जी के साथ वार्तालाप भी हुआ।
- (3) **विविध कार्यों में कार्यरत प्रचारकों का वर्ग :** विभिन्न स्तरों के प्रचारकों की प्रशिक्षण मालिका में इस वर्ष समाज जीवन के विविध कार्यों में कार्यरत प्रचारकों का वर्ग गाजियाबाद के निकट मुरादनगर स्थान में दीपावलि पर्व के दिनों में (दिनांक 2 से 6 नवंबर 2013) संपन्न हुआ। वर्ग में 33 संगठनों के 483 अपेक्षितों में से 432 प्रचारक सहभागी हुए। पू. सरसंघचालक जी, मा. सरकार्यवाह जी समेत कई अखिल भारतीय अधिकारियों का वर्ग में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। प्रचारक अधिष्ठान, भूमिका, व्यवहार, हिन्दुत्व व कार्यक्षेत्र के कई विषयों पर बौद्धिक तथा चर्चायें हुईं। भगवद्गीता के विषय के आधार पर त्रिगुण संपदा को जानने की एक कार्यशाला का आयोजन भी इस वर्ग में हुआ।

## प्रान्तों में संपन्न विशेष कार्यक्रम :

### 1. संकल्प महाशिविर, महाकौशल :

स्वामी विवेकानंद सार्ध शती को निमित्त बनाकर संकल्प शिविर का आयोजन किया गया। जनवरी 2014 के प्रथम सप्ताह में आयोजित इस महाशिविर में सभी तहसील, नगर और 2505 मंडलों में से 2079 मंडलों का प्रतिनिधित्व रहा। लक्ष्य के रूप में चिंतन किया गया था, कि अधिकांश स्थानों का प्रतिनिधित्व हो, प्रत्येक दायित्ववान कार्यकर्ता सक्रिय हो, शिविर को निमित्त बनाकर नये-नये युवा कार्यकर्ताओं को संघ के साथ जोड़ा जाए। परिणामतः 6066 ग्रामों से 713 नगरीय बस्तियों से (कुल नगरीय बस्तीयाँ - 724), 138 नगरों की सभी बस्तियों में से, 52 तहसीलों की सभी मंडलों से तथा 24 मंडलों के सभी ग्रामों से, स्वयंसेवक शिविर में सहभागी हुए। शिविर में सहभागी स्वयंसेवकों की कुल संख्या 34668 थी।

शिविर में 'हिन्दुत्व एक जीवन दृष्टि' इस विषय को केंद्र में रखकर भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया था, जिसे लगभग 1 लाख नागरिकों ने देखा।

पूर्व तैयारी की दृष्टि से 1191 विस्तारक निकले। संपूर्ण प्रांत में 10 हजार से अधिक बैठकें व लगभग 8 हजार एकत्रीकरण के कार्यक्रम हुए। समापन कार्यक्रम हेतु 1 लाख 60 हजार परिवारों में संपर्क हुआ, परिणामतः समापन समारोह में 90 हजार भाई-बहनें सम्मिलित हुए। शिविर के दौरान ही मातृशक्ति सम्मेलन, संत समागम और प्रबुद्ध नागरिक गोष्ठी का आयोजन भी हुआ। कार्यविस्तार की दृष्टि से निश्चित ही एक सफल आयोजन सिद्ध हुआ है।

### 2. महाविद्यालयीन विद्यार्थी शिविर, मध्यभारत:

31 जनवरी से 2 फरवरी 2014 तक मध्यभारत प्रांत का महाविद्यालयीन विद्यार्थियों का शिविर संपन्न हुआ। शिविर की पूर्व तैयारी की दृष्टि से प्रांत में 142 स्थानों पर एकत्रीकरण संपन्न हुए। इन एकत्रीकरणों में 3317 सूचीबद्ध स्वयंसेवकों में से 2028 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। अर्हता पूर्ण करने वाले 832 स्वयंसेवकों का शिविर हेतु पंजीयन हुआ।

शिविर में 85 स्थानों से 545 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। एक छोड़कर सभी जिलों से प्रतिनिधित्व रहा। परिणामतः महाविद्यालयीन विद्यार्थी कार्य में वृद्धि हुई है। भविष्य में विस्तारक के रूप में एक वर्ष तक कार्य करने की तैयारी 41 स्वयंसेवकों ने दर्शायी है।

### 3. गुजरात में संपन्न जिलाशः एकत्रीकरण :

आगामी जनवरी 2015 में आयोजित कार्यकर्ता शिविर एवं त्रिवर्षीय कार्यविस्तार की योजना को ध्यान में रखकर दिसंबर-2013 से जनवरी-2014 के इस कालखंड में संपूर्ण प्रांत में एक दिवसीय जिलाशः एकत्रीकरणों का आयोजन किया था। इन एकत्रीकरणों में 252 में से 248 तहसील एवं 1948 मंडलों में से 1133 मंडलों का प्रतिनिधित्व रहा। महानगर के सभी 116 नगरों की 1214 बस्तियों में से 842 बस्तियों से स्वयंसेवक सहभागी हुए। कुल मिलाकर 2386 स्थानों से 26519 स्वयंसेवकों की संख्या रही। परिणामतः कार्यविस्तार के दृष्टि से संतोषजनक वृद्धि होगी।

### 4. छत्तीसगढ़ प्रांत :

#### (अ) विभागशः शाखा टोली शिविर :

गत वर्ष शाखाओं के मुख्यशिक्षक, कार्यवाह स्तर के कार्यकर्ताओं के शिविर आयोजित किये थे। अनुवर्तन के नाते इस वर्ष सितंबर मास में शाखा टोली के कार्यकर्ताओं के विभागशः शिविर की योजना बनाई थी। 444 शाखाओं में से 1362 कार्यकर्ता शिविर में उपस्थित रहे, परिणामतः टोलीयुक्त शाखाओं की संख्या में वृद्धि और सक्रियता बढ़ी है।

#### (आ) खंडशः बाल शिविर :

इस वर्ष खण्डशः बाल स्वयंसेवकों के लिये 24 घंटे के शिविरों का आयोजन किया था। 77 खण्डों में शिविर संपन्न हुए, जिसमें 625 स्थानों से 6591 स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। शिविर में शारीरिक, बौद्धिक प्रतियोगिताओं का

आयोजन किया था। 40 प्रतिशत नये बाल स्वयंसेवक शिविर में सम्मिलित हुए।

**(इ) साहित्य बिक्री दिन :**

घर-घर अपना साहित्य पहुँचे, इस दृष्टि से सभी जिला मुख्यालय तथा नगर केन्द्रों में एक ही दिन साहित्य बिक्री की योजना बनाई गई । इसमें 114 स्थानों पर 1105 कार्यकर्ता सहभागी हुए। मात्र दो घंटे चले इस कार्यक्रम में लगभग एक लाख रू. मूल्य की पुस्तकों की बिक्री हुई । कार्यक्रम उत्साहवर्धक रहा।

**(ई) पथसंचलन :**

गुणात्मकता को ध्यान में रखकर जिला केन्द्रों में 22 से 24 दिसंबर के मध्य पथसंचलन हो, ऐसी योजना बनी थी। सभी जिला केन्द्रों में कार्यक्रम संपन्न हुए। कुल 1840 स्थानों से 17868 स्वयंसेवक पूर्ण गणवेश में उपस्थित रहे। 885 घोष वादकों की सहभागिता रही। संचलन के अंत में 'प्रार्थना' विषय पर बौद्धिक वर्ग हुआ।

**(उ) नव चैतन्य शिविर :**

सार्ध शती को निमित्त बनाकर प्रांत का 'नव चैतन्य शिविर' संपन्न हुआ। जिसमें 386 महाविद्यालयों से 1650 महाविद्यालयीन छात्र सम्मिलित हुए। बिहार के 'सुपर-30' के निर्देशक श्री आनंदकुमार जी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। 40 प्रतिशत नये छात्रों ने भाग लिया, यह इस शिविर की विशेषता रही। प्रांत में महाविद्यालयीन छात्रों में कार्य वृद्धि की दृष्टि से यह शिविर सार्थक सिद्ध होगा, यह विश्वास है।

**5. चित्तौड़ प्रांत :**

**(अ) विराट हिन्दु धर्म संमेलन, बांसवाड़ा :**

चित्तौड़ प्रांत के बांसवाड़ा में "मानगढ बलिदान शताब्दी समारोह समिति" द्वारा विराट हिन्दु संमेलन का आयोजन किया गया। प.पू.सरसंघचालक जी

की उपस्थिति में संपन्न यह संमेलन हिन्दु शक्ति दर्शन की दृष्टि से सफल रहा है। परिसर के 150 संतों की सक्रिय सहभागिता, जनसामान्य का विभिन्न प्रकार का सहयोग एवं कार्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप में उपस्थिति अत्यंत प्रेरणादायी रही। 302 मंडलों से 2063 ग्रामों से 95382 पुरुष एवं 26129 महिलायें ऐसी कुल 1 लाख 21 हजार 511 की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के पूर्व तैयारी हेतु 83 ग्रामों के भजन मंडली का प्रयास एवं 1124 ग्राम सभाओं का आयोजन किया गया। अनुवर्तन की दृष्टि से तहसीलशः संघ परिचय वर्गों का आयोजन किया जायेगा।

### (आ)विस्तारक योजना :

दिनांक 24 से 31 दिसंबर 2013 तक कार्य के दृढीकरण एवं विस्तार हेतु ग्रामीण विस्तारक अभियान लिया गया। पुरे प्रांत के 24 जिलों से विस्तारक विभिन्न स्थानों पर गये। कुल 1856 विस्तारक 1651 स्थानों में गये। इस अभियान के कारण इस वर्ष स्थान व शाखाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। इसके अलावा प्रथमबार ग्राम विकास की कल्पना को सामने रखकर दंपत्ति विस्तारक की योजना बनाई गई । जिसमें 51 दंपत्ति विस्तारक निकले और विस्तारक के रूप में गांव में ही रहे। इसका अनुभव अच्छा रहा।

### 6. हिन्दु शक्ति संगम, जम्मू :

प.पू. सरसंघचालक जी के जम्मू प्रवास के अवसर पर 'हिन्दु शक्ति संगम' इस नाम से प्रांत के तरुण स्वयंसेवकों के एकत्रीकरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। संपूर्ण प्रांत से 738 स्थानों से 4454 स्वयंसेवक निर्धारित वेश में उपस्थित रहे। लगभग इतनी ही संख्या में जम्मू शहर के नागरिकों की उपस्थिति रही। जम्मू में इस प्रकार का हिन्दु शक्ति दर्शन का कार्यक्रम हिन्दु समाज के लिये मनोबल बढ़ाने वाला रहा। निश्चित ही कार्यकर्ताओं की सक्रियता की दृष्टि से यह आयोजन सफल सिद्ध हुआ।

## 7. नवभारत युवा शक्ति संगम, तेजपुर :

उत्तर असम प्रांत का तीन दिवसीय “नवभारत युवा शक्ति संगम” का आयोजन 24 से 26 जनवरी 2014 को तेजपुर में संपन्न हुआ। शिविर में 28 से 40 वर्ष की आयु के स्वयंसेवकों को ही प्रवेश था। उत्तर असम प्रांत के अंतर्गत ब्रम्हपुत्र घाटी के साथ ही नागाभूमि और मेघालय राज्यों सहित 29 जिलों से 2749 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। प.पू.सरसंघचालक जी का पूर्ण समय सानिध्य प्राप्त हुआ। शिविर में संपन्न विभिन्न शारीरिक तथा बौद्धिक कार्यक्रमों में शिविरार्थी स्वयंसेवकों की सहभागिता अच्छी रही। 25 जनवरी को पथसंचलन एवं सायं के समय श्री सत्यनारायण जी मौर्य द्वारा प्रस्तुत ‘भारत माता की आरती’ का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

समापन समारोह में केन्द्रिय विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति डॉ. अमरज्योती चौधरी जी की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय है। शिविर में संघकार्य का परिचय कराने वाली प्रदर्शनी आकर्षण का केन्द्र बनी। तेजपुर नगर से 8000 नागरिकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

## 8. पूर्णकालीन कार्यकर्ता और प्रचारक वर्ग, असम :

असम क्षेत्र में विभिन्न कार्यों में कार्यरत पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की संख्या बहुत अच्छी है। क्षेत्र में लगभग 950 पूर्णकालीन महिला-पुरुष कार्यकर्ता हैं। संघ के प्रचारकों की संख्या 72 है। इस वर्ष की कार्ययोजना में जिला एवं तदुर्थ कार्यकर्ताओं का एक सामूहिक वर्ग हो ऐसी योजना बनी थी। दि. 11 से 14 फरवरी होजाई में यह वर्ग संपन्न हुआ। मा. सरकार्यवाह, सह-सरकार्यवाह, विश्व हिंदु परिषद के अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री दिनेशचंद्र जी, वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष श्री कृपाप्रसाद जी, राष्ट्र सेविका समिति की सुश्री सुनिताताई भी इस वर्ग में उपस्थित रहें। विभिन्न चर्चा सत्रों में कार्यकर्ताओं को अपने अनुभव, विचार रखने का अवसर प्राप्त हुआ। उद्घाटन में सह-सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल जी का मार्गदर्शन एवं अन्य समय में श्री दिनेशचंद्र जी का मार्गदर्शन मिला। मा. सरकार्यवाह जी द्वारा समापन हुआ। वर्ग में एक सत्र में महिला कार्यकर्ताओं का

सुश्री सुनिताताई हलदेकर जी के साथ मुक्त वार्तालाप हुआ। विभिन्न संगठनों की कार्यस्थिति दर्शानेवाली एक प्रदर्शनी भी वर्ग स्थान पर लगाई थी। इस वर्ग में असम क्षेत्र के 19 में से 17 संगठनों के कुल 470 में से 368 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

## 9. आरोग्य चेतना शिविर, गुवाहाटी :

सेवा विभाग की योजना से सेवाभारती, पूर्वांचल के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में, विगत 20 वर्षों से कार्यरत है। विशेषतः स्वास्थ्य विषय पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया है। पूर्वोत्तर राज्यों में दूरदराज के ग्रामों में आज भी सामान्य चिकित्सा सेवाएँ उपलब्ध नहीं होती। सेवाभारती ने वहाँ पर आरोग्य रक्षक योजना प्रभावी रूप से प्रारंभ की है। आज तक 5000 से अधिक युवक-युवतियों को प्रशिक्षित किया है। उसमें से अनेक बंधु आज भी अपनी सेवाओं से समाज को लाभान्वित कर रहे हैं। ऐसे सभी कार्यकर्ताओं का एक शिविर 7, 8 नवंबर 2013 को गुवाहाटी में आयोजित किया गया था। 2500 आरोग्य रक्षकों का शिविर हेतु पंजीयन हुआ और 1648 ग्रामों से 877 महिला और 1066 पुरुष आरोग्य रक्षक शिविर में सहभागी हुए। स्वास्थ्य विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन, अनुभवों का आदान-प्रदान और अखिल भारतीय सेवा प्रमुख श्री सुहासराव हिरेमठ, आरोग्य भारती के संगठन मंत्री डॉ. अशोक जी वाष्णेय, राष्ट्रीय सेवाभारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री सूर्यप्रकाश जी टोंक, मा. सरकार्यवाह श्री भैयाजी जोशी आदि अधिकारियों का मार्गदर्शन शिविरार्थियों को मिला।

शोभायात्रा एक विशेष आकर्षण कार्यक्रम रहा। 18 से 35 आयु के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति इस शिविर की विशेषता रही। सहभागियों ने अपना प्रवास व्यय स्वयं वहन किया। उत्तर पूर्व क्षेत्र के सेवा क्षेत्र के लिये यह शिविर एक नई उर्जा प्रदान करने वाला रहा।

## प.पू.सरसंघचालक जी का 2013-14 का प्रवास :

इस वर्ष की प्रवास योजना में प.पू.सरसंघचालक जी का क्षेत्रशः प्रवास हुआ है। संगठनात्मक बैठकों के साथ-साथ स्वयंसेवकों के एकत्रीकरण के कार्यक्रम हुए। विशेष कार्यक्रमों में उपस्थिति और विशेष संपर्क योजना अंतर्गत महानुभावों से अनौपचारिक वार्तालाप के कार्यक्रम भी हुए।

विशेष उल्लेखनीय कार्यक्रमों में उत्तरकाशी के निकट मनेरी में स्वयंसेवकों का पूर्ण गणवेश में एकत्रीकरण का कार्यक्रम प्रभावी रहा।

पुणे में वैज्ञानिकों के साथ संवाद का कार्यक्रम हुआ। देश के अग्रिम पंक्ति के वैज्ञानिकों से मिलने का भी कार्यक्रम हुआ, जिसमें 9 प्रमुख वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

जम्मू प्रवास में अवकाश प्राप्त सेना के अधिकारियों से संवाद तथा चेन्नई में तमिल भाषा के प्रमुख साहित्यकारों के साथ वार्तालाप का कार्यक्रम भी अच्छा रहा।

विजयादशमी के भाषण पर दिल्ली में प्रबुद्ध जनों के साथ वार्तालाप का कार्यक्रम रखने का क्रम गत 2-3 वर्षों से चल रहा है। विशेषतः अवकाश प्राप्त सेना व प्रशासकीय अधिकारी, पत्रकार बंधु, सामाजिक संगठनों के प्रमुख पदाधिकारी, शिक्षाविद, अर्थतज्ञ, ऐसे महानुभाव उपस्थित रहते हैं। इस वर्ष भी यह कार्यक्रम दिल्ली में संपन्न हुआ।

इन्दौर में विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के संचालक, मुंबई में आई.आई.टी. पवई के प्राध्यापक वर्ग, व्यापार, उद्योग जगत से जुड़े महानुभावों के साथ भी संवाद के कार्यक्रम संपन्न हुए हैं।

व्यक्तिगत भेंट के कार्यक्रम भी हुए हैं। जिनमें पूज्य आचार्य महाश्रमण जी, जैनाचार्य श्रीमद् विजय रत्नसुंदर सुरीश्वर जी, जैन मुनि पूज्य श्री विद्यासागर जी, पूज्य श्री तरुण सागर जी, पूज्य श्री पुलक सागर जी, कांची आचार्य पूज्य जगद्गुरु जयेंद्र सरस्वती जी महाराज, पूज्य शिवबाबाजी, पुणे के पूज्य दादा जे.पी. वासवानी जी एवं राधास्वामी सत्संग सभा के प्रमुख से भेंट एवं वार्तालाप उल्लेखनीय है।

विविध विधाओं की जानीमानी हस्तियों से भी मिलना हुआ है। जिसमें सुप्रसिद्ध संगीतकार पं. अजय चक्रवर्ती, सुप्रसिद्ध फुटबॉल खिलाड़ी सुब्रतो रॉय, अवकाश प्राप्त मेजर जनरल के.के.गांगुली, उच्च न्यायालय के निवृत्त न्यायमूर्ति श्री व्ही. आर्. कृष्ण अय्यर जी, तामिलनाडु के न्यायमूर्ति श्री रामालिंगम जी, राजस्थान के सिरौही के महाराजा श्री रघुवीरसिंह जी आदि विशेष उल्लेखनीय है।

## मा. सरकार्यवाह जी का प्रवास :

इस वर्ष मा. सरकार्यवाह जी के क्षेत्रशः प्रवास की योजना बनी थी। विशेषतः प्रांत टोली के कार्यकर्ता, समन्वय टोली की बैठकें और गतिविधि के प्रांत स्तर के कार्यकर्ताओं की बैठकों का आयोजन इस प्रवास में किया गया था। सभी बैठकों में 65 से 85 प्रतिशत उपस्थिति रही। प्रवास में राज्यशः 'विशेष चिंतन' बैठकों की योजना बनी थी। इन बैठकों में वर्तमान सामाजिक परिस्थिति, हिन्दु समाज के सम्मुख चुनौतियाँ, अराष्ट्रीय व असामाजिक गतिविधि इन विषयों पर समीक्षात्मक चिंतन हुआ। चिंतन बैठक के पश्चात् अनुवर्तन की दृष्टि से विचार किया गया। विभिन्न स्तरों पर इस प्रकार की प्रक्रिया चले इसकी आवश्यकता है। चिंतन के परिप्रेक्ष्य में अपनी कार्य योजना बननी चाहिये, इस दिशा में प्रयास प्रारंभ होंगे।

## राष्ट्रीय परिदृश्य

इस वर्ष (2013-14) में दो विशेष कार्यक्रम संपन्न हुए।

- (1) **स्वरांजलि** : इटानगर, अरुणाचल में संस्कार भारती द्वारा आयोजित "सरहद को स्वरांजलि", चीन के आक्रमण को 50 वर्ष पूर्ण हुए, इसको निमित्त बनाकर, 1962 के चीनी आक्रमण में शहीद हुए वीरों का स्मरण एवं उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। 1963 से लेकर आजतक जनसामान्य को रोमांचित करने वाला "ऐ मेरे वतन के लोगो" गीत और श्री भूपेन जी हजारिका द्वारा रचित व स्वरबद्ध हुआ असमिया गीत "कत जोवानर मृत्युहोल" यह कार्यक्रम का आकर्षण रहा। उत्तर पूर्व के 8 राज्यों के छात्रों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। कार्यक्रम में शहीदवीर श्री जसवन्त सिंह रावत की 92 वर्षीय माता श्रीमति लीला देवी जी उपस्थित रही। उत्तर पूर्व के राज्यों से विभिन्न जनजातिय बंधुओं की सहभागिता व देशभर में से 1000 से अधिक कलाकारों का इसमें सम्मिलित होना देश की एकात्मता का समाज को दर्शन कराता था।

शहीद वीरों के जन्मस्थान की और सीमावर्ती गावों की अभिसिंचित माटी, रक्षासूत्र एवं सुश्री लता मंगेशकर जी के हस्ताक्षर युक्त स्मृति चिन्ह सभी शहीद परिवारों तक पहुँचाने की योजना आयोजकों ने बनाई है।

(2) **स्वामी विवेकानंद सार्ध शती समारोह** : देशभर में संपन्न स्वामी विवेकानंद सार्धशती समारोह निमित्त आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में वनवासी, ग्रामवासी, मातृशक्ति, युवा वर्ग और समाज के प्रबुद्ध वर्ग की सहभागिता अभूतपूर्व रही।

स्वामी विवेकानंद जी द्वारा प्रस्तुत विचारों के प्रकाश में विविध विषयों पर प्रबुद्ध वर्ग हेतु गोष्ठीयाँ, परिसंवाद आयोजित किये गये और स्वामीजी द्वारा प्रतिपादित विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है इसका सभी स्तरों पर अनुभव किया।

विशेषतः स्वामीजी का 'व्यक्ति निर्माण' व 'राष्ट्र निर्माण' का ध्येय पुनः चिंतन में आया। विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, उपकुलपति, शिक्षाविद्, अवकाश प्राप्त न्यायमूर्ति, सेना अधिकारी, वैज्ञानिक, धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र के श्रेष्ठ महानुभावों की सहभागिता अत्यंत प्रेरक रही। रामकृष्ण मिशन, गायत्री परिवार, शारदा पीठ, चिन्मय मिशन, स्वामीनारायण संस्था, जैन संप्रदाय जैसी संस्थाओं का सहयोग कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने वाला रहा।

पू. माता अमृतानंदमयी अम्मा की अध्यक्षता से और सन्माननीय सुभाष जी कश्यप जैसे महानुभावों के मार्गदर्शन में संपन्न यह समारोह चिंतन, अध्ययन, जागरण, सहभागिता इस दृष्टि से अपने देश के भविष्य का पथ निर्धारित करने वाला सिद्ध होगा। इस संपूर्ण समारोह का कुशल संचालन विवेकानंद केन्द्र, कन्याकुमारी द्वारा किया गया।

**देश की असुरक्षित सीमा** - भारत की सीमाएँ पाकिस्तान, बांगला देश, नेपाल, म्यांमार, भूटान, तिब्बत (चीन) इन देशों से लगी हुई है। हमने केरल में संपन्न अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल में एक प्रस्ताव पारित कर, देश की जनता एवम् शासन का ध्यान आकर्षित किया था।

सभी भू-सीमाओं पर आधारिक सुविधाओं का ढांचा सशक्त करने की दृष्टि से अधिक गंभीरतापूर्वक ध्यान देने की आवश्यकता है। आज सुविधाएँ पुरी तरह से अपर्याप्त है। आज सीमा पर मार्ग नहीं है, जहाँ है वहाँ पर या तो सड़कों की स्थिति बहुत खराब है अथवा आवागमन की दृष्टि से योग्य नहीं है। सुव्यवस्थित सड़कों

की अनुपस्थिति में आवागमन अथवा क्षेत्र का विकास कैसे संभव है? लद्दाख, अरुणाचल के सीमावर्ती गांव तो अत्यंत पिछड़े हुए एवं दुर्लक्षित हैं। वास्तव में ऐसे सीमावर्ती ग्रामवासियों की शक्ति का सुरक्षा की दृष्टि से सही उपयोग करने की योजना बनानी चाहिये। लेकिन न राज्य सरकार और न केन्द्र सरकार इसके प्रति गंभीर दिखा देती है। हमारी सीमाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित एवं निर्धारित हैं, परंतु सीमाएँ विवादित हैं, इस प्रकार की चर्चा पड़ोसी देश चलाते हैं। हमें इस संदर्भ में सीमान्त देशों से कहना चाहिये, इतना ही नहीं तो सीमांत क्षेत्रों में इन देशों ने अपनी जमीन पर जबरन अवैध कब्जा कर रखा है, उसे खाली करवाने में पहल करनी चाहिये।

हमने हमारे प्रस्ताव में सीमा आयोग बनाने का सुझाव रखा है, जिससे सीमान्त जनता, केन्द्रिय सुरक्षाबल और सीमावर्ती राज्य सरकार में तालमेल रखते हुए सुरक्षा और विकास की दिशा में उचित कदम उठाने में सुगमता रहेगी। समुचित व्यवस्था के अभाव के चलते ही मादक पदार्थों की तस्करी, देश में अवैध शस्त्रों का प्रवेश, जाली करंसी और विदेशी नागरिकों का अवैध पद्धति से देश में आकर रहना आसानी से अपने देश में होता रहता है। आज सीमावर्ती क्षेत्र में आवागमन, संचार व्यवस्था, बिजली की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में हो, इसकी आवश्यकता है। उद्योग, रोजगार, शिक्षा व्यवस्था के अभाव में सीमावर्ती ग्रामों से युवाओं का स्थानांतरण, यह चिंता का विषय है। केन्द्र सरकार इस संदर्भ में अधिक गंभीरतापूर्वक विचार कर योजनाओं को क्रियान्वित करें।

**हिन्दु जीवन शैली के सम्मुख गंभीर चुनौती** – गत वर्ष दो विषय समाज जीवन में चर्चा के विषय बने। “विवाह बाह्य सहजीवन” और “समलैंगिकता” को वैधानिक मान्यता देने के निर्णय को लेकर बहस प्रारंभ हुई।

विश्व में भारत अपनी विशेष जीवन शैली, संस्कृति, परंपराएँ एवं मान्यताओं के लिये जाना जाता है। हजारों वर्षों में सभी प्रकार के सामाजिक प्रयोग और उनके अनुभव के प्रकाश में यहाँ नैतिक मूल्य आधारित एक सुसंस्कृत जीवन विकसित होता आया है। ‘विवाह संस्था’, यह पवित्र संबंध, अपनी विशेषता है। परिवार, सामाजिक व धार्मिक मान्यताओं, मर्यादाओं के पालन से समाज जीवन सुरक्षित

रहा है। वैधानिक बंधनों से कई गुणा अधिक परिणामकारी सामाजिक बंधन रहते हैं।

व्यक्ति स्वातंत्र्य के नाम पर हमारे नैतिक मूल्यों के साथ, समाज व्यवस्था, परंपराएँ, मान्यताओं के साथ समझौता कैसे हो सकता है? वैधानिकता प्रदान करने के पूर्व समाज जीवन पर होने वाले दूरगामी दुष्परिणामों को भी ध्यान में रखना होगा। श्रुती और स्मृतियों के प्रकाश में युगानुकूल परिवर्तन करने वाला यह समाज रहा है। कानून व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करता है। परंतु कानून के द्वारा परंपराएँ, मान्यताएँ, संस्कृति, जीवनमूल्यों को मानने वाला समाज सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। धार्मिक, सामाजिक चिंतकों के द्वारा प्राप्त होने वाला मार्गदर्शन से ही समाज जीवन सुरक्षित रहेगा।

## देश की एकात्मता :

2013-14 इस कालखंड में देश की एकात्मता और सद्भावपूर्ण वातावरण को दूषित करने वाली कुछ घटनायें हमारे अंतःकरण में वेदना निर्माण करने वाली रही हैं।

इसी भूमि में निर्मित विभिन्न पंथ, संप्रदाय मूलतः एक ही चिंतन की विविध शाखाओं के रूप में विकसित हुए और एकात्मभाव से हजारों वर्षों से रहते आये हैं। परंतु गत कुछ वर्षों से अल्पसंख्य-बहुसंख्य इस प्रकार की विभेदकारी नीतियों को अपने क्षणिक, राजनैतिक स्वार्थपूर्ति हेतु अपनाया जा रहा है। अभी-अभी जैन समाज को अल्पसंख्यक घोषित करना इसी मानसिकता का द्योतक है। सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र के चिंतकों ने एकसाथ विचार-विमर्श करते हुए देश के एकात्मभाव को सुरक्षित रखने की दिशा में पहल करने की आवश्यकता है।

समय-समय पर बड़े राज्यों के विभाजन की चर्चा चलती है। आवश्यकतानुसार राज्यों की रचना करना आवश्यक भी है और उचित भी है। दुर्भाग्य है कि ऐसे विषयों का भी राजनैतिक लाभ-हानी की परिप्रेक्ष्य में विचार किया जाता है। सामाजिक संबंध, परस्पर विश्वास को सुरक्षित रखते हुए निर्णय होने चाहिये। विभाजन करते समय अनावश्यक उत्तेजना निर्माण न हो, एवं किसी भी समूह अथवा भौगोलिक

क्षेत्र के नागरिकों को न्योयोचित लगे, इसका भी ध्यान रखने की आवश्यकता है। अन्यथा ऐसी घटनाओं के सामाजिक संबंधों पर दूगामी परिणाम होने की संभावना बनी रहती है।

निकट भविष्य में देश में लोकसभा चुनावों का दौर चलेगा। समस्त देशवासियों के लिये यह एक उचित अवसर है। केन्द्र की वर्तमान सरकार की विश्वसनीयता, प्रामाणिकता व देशहित के प्रति प्रतिबद्धता पर आज प्रश्नचिन्ह लगा है। आज देश परिवर्तन की अपेक्षा कर रहा है। जागृत मतदाताओं की सक्रिय भूमिका ही देश का भविष्य निर्धारित कर सकती है। हम सभी को इसी दृष्टि से अपनी भूमिका को समझकर उसका निर्वाह करना होगा। परिणामतः जनसामान्यों के इच्छा, आकांक्षानुसार परिवर्तन का अनुभव हम कर सकेंगे।

### **समापन :**

आज देशभर में अपने कार्य के प्रति आस्था और अपेक्षाएँ बढ़ी है, यह हम सभी अनुभव कर रहे हैं। परंतु साथ-साथ हमारा सामर्थ्य भी उस अपेक्षा की पूर्ति करने हेतु पर्याप्त मात्रा में बढे, इस दृष्टि से निरंतरता एवं परिश्रम पर अधिक ध्यान देना होगा। गत दो वर्षों से कार्यवृद्धि की दिशा में अच्छी योजना हम बना रहे हैं और परिणाम भी आ रहे हैं।

श्रद्धा, ज्ञान और कौशल्य से यदि हम संघकार्य करते हैं तो लक्ष्य पूर्ति का आनंद हम अवश्य अनुभव करेंगे। पू. श्री गुरुजी के शब्दों को स्मरण करें, वे कहते थे “बातें कम, काम अधिक” ऐसा संकल्प हम करें। हमारी योजना और परिश्रम निश्चित ही संघ की सफलता की घोषणा करेगी।

At the outset, I heartily welcome Param Poojaniya Sarsanghachalakji, respected Akhil Bharatiya Padadhikaris, members of the Akhil Bharatiya Karyakari Mandal, esteemed Kshetra Sanghachalaks, Pranth Sanghachalaks and Karyvahs, members of the Akhil Bharatiya Pratinidhi Sabha, and the sisters and brothers, who have been engaged in different social activities and attending this session as special invitees, to the Akhil Bharatiya Pradhinidhi Sabha of Yugabda 5115 (March 2014), being held at Bangaluru.

### **Respectful Homage :**

The absence of those who were engaged providing impetus to the ongoing process of social regeneration by actively fulfilling their duties with utmost commitment and dedication, is certainly an extremely painful experience for us, and it is quite natural that their memories will come up in our minds very often.

Sri Vilasji Phadnavis, former Paschima Kshetra Karyavah, whose very life was dedicated to the Sangh work and its philosophy, has left us forever, battling against agonizing physical ailments. Sri. Rajaramji, who was engaged in the mission of protecting cows in the Punjab, fell a victim to cardiac arrest and departed quite unexpectedly. Sri. Dinanthji Mishra, ex M.P. and journalist, who had acquired fame for his clarity of thoughts, has also left us. Mananiya Shivakumarji Bharatiya, Saha-Vibhag Sanghachalak of Champaran, who had come to Nagpur for the third year Sangha Siksha Varg, expired even before he could complete his training in the Varg. Sah Vibhag Sanghchalak of Sawai Madhopur Dr. Haricharanji Sharma, Sri Arunda

Chakravarthi, Mananiya Sanghachalak of Howrah South Bhagh, Sri Gujransingh Thakur, Senior Pracharak of the Kashi Pranth, Man. Sanghchalak of Amrutsar district Sri Santok sinhji, Sri. R.N. Venkitaraman, a Vanaprasthi, who was active as the Karyalaya Pramukh at the Chennai Karyalaya, who was also karyalaya pramukh of Vivekanand Sheela Smarak Samiti in its initial phase, and Sri Maneklalji Patel, former Mananiya bhag Sanghachalak of Karnavati Mahanagar, are also not with us now. Sri. Aravind Harshe of Pune, who had virtually fulfilled his vow to dedicate his body, mind and resources to the Sangh cause, and who had groomed the Viswa Hindu Parishad in Maharashtra State into a strong, formidable force, had to lay down his life fighting cancer. Sri. P.T. Rao of Kerala, who was looking after the work of the Bharatiya Mazdoor Sangh as a Vanasprasthi, Sri. K.S. Murthi of Hyderabad, who was the Vanavasi Avaas Pramukh of Andhra Pradesh and Sri. Prabhakarji of Hyderabad, who was the Kshethra Karyadarshi of the Bharat Vikas Parishad, are also no longer with us.

Sri. Namdeoji Dhasal, the celebrated author of Maharashtra and Sri Rajendraji Yadav from Delhi who have expressed the pains of the society, especially of the deprived sections. Sri. Deepchandji Gardi, an industrialist and philanthropist of Mumbai, His Highness Srikantadatta Narasimharaja Wadiyarji, the Maharaja of Mysore, who had made grate contributions to promoting the work of Viswa Hindu Parishad and Hindu thought, and His Highness Uthradom Thirunal Marthanda Varmaji, the Maharaja of Travancore, a Sanskrit scholar from Mysore, Maha Mahopadhyay Sri Ranganathji Sharma, President of Hindu Mahasabha Sri Vikramji Sawarkar and Famous Kannada Poet from Bangalore 'Rashtra Kavi' Dr. G. S. Shivarudrappaji have also departed.

Sri. Eswardasji Rohani, the Speaker of the Madhya Pradesh Assembly, Sri. Muralilalji, the Member of Parliament from Chattisgarh, Sri. Sheeshramji Ola of Rajasthan, a former Union Minister, Sri Bangaru Lakshman Ex. M.P. and Ex. National President of BJP are also no more. Padmashree recipients Dr. Vikramji Marvaha of Nagpur and Sri Vijayadanji Detha (Bijji), a famous writer of Rajasthan, film artistes Srimathi Suchitra Sen and A. Nageswara Rao, Nelson Mandela of South Africa, Syedna Mohammed Burhanuddin, the spiritual head of the Dawoodi Bohrah Community, also have left us. Their memory will ever linger in our minds for the contributions made by them.

Pujya Kripaluji Maharaj, who had displayed tremendous capacity in guiding the lives and thought of others through his spiritual insight and sweet discourses, has attained Mukthi.

Many devotees and pilgrims, who had reached Uttarakhand from different states of our country, became victims of an unprecedented natural calamity, so that they could never go back to their near and dear and all of them have attained to their final adobe.

We pay our respectful homage to all those who had lost their lives in accidents and calamities, and those who had fallen a prey to terrorists attacks, and convey our heartfelt condolences to their bereaved families. We also pray to the Almighty God for the Sadgathi of the departed Souls.

### **Present Status of Sangh work:**

During the year 2013-2014, all over the country, in all, 48 first year common Sangh Siksha Vargs, 6 first year special Sangh Siksha Vargs, 12 second year Sangh Siksha Vargs, one common third year Sangh Siksha Varg, one third year special Sangh Siksha Varg, were held, the total number of Vargs being 68. In the first

year common Varg a total of 10435 Swayamsevaks from 6759 places, and in the first year special Varg 386 Swayamsevaks from 286 places, attended as trainees. In the second year Vargs, 2231 Swayamsevaks from 1825 places attended as trainees. And in the third year common Varg, 607 Swayamsevaks representing 565 places, and in the third year special Varg, 360 Swayamsevaks participated as trainees. This year along with common Vargs, second year special Vargs will be conducted at four or five places.

According to the available statistics, all over the country, 44982 Sakhas are being conducted at 29624 places. Saptahik Milans (weekly congregation) are being held at 10146 places, whereas work is being carried out in the form of Sangh Mandalis (monthly congregation) at 7387 places.

## **Department wise report :**

### **1. Sharirik Vibhag (Physical Training) :**

As in the previous year, this year also “Prahar Mahayagna” was planned on December 16. In 19096 Shakhas, 2, 08,386 Swayamsevaks took part in the event and executed 8 crore, 28 lakh, 30 thousand and 122 prahars. Compared to last year, there was an increase of almost 25%. Two thirds of the Swayamsevaks who participated were less than 45 years old. The number of Swayamsevaks who executed more than 1000 prahars, registered a two-fold increase and stood at 37,006.

### **Ghosh :**

In 2013-14, Ghosh Prasikshan Vargs (Training camp for band troupe) were held in 30 Pranth (Provinces), in which

altogether 4792 Swayamsevaks took part. In 11 Pranths, Srīngā Vadya Prasikshan (Training in musical instruments like Saxophone, Clarinet, etc.) was specially held, in which 477 Swayamsevaks took training.

In Bangaluru Mahanagar, Ghosh route march and a mass playing of instruments programmes were conducted, in which 1072 Taruns (youths) participated. A similar programme was held in Chithod Pranth also. In the Pranth, route marches were taken out from 42 places simultaneously, in which 1036 Swayamsevaks took part.

Four day Ghosh camps were held in Delhi and Chithod Pranths under the name “Indraprasth Nad” and “Swar Ninad” respectively. In Delhi Pranth, 807 Swayamsevaks participated, whereas in chithod Pranth 594 took part.

## 2. **Boudhik Vibhag (Intellectual activities) :**

At the All India level, a workshop to impart training in narrating long stories was arranged at Jhansi, in which 58 Karyakarthis (workers) from 30 Pranths participated. The Prasikshan was highly effective in improving preparedness and presentation. And the practice of narrating long stories has improved in the Sakhas.

**Prarthana week** : The period of February 16 to 23, was planned as the “Prarthana week”. The planning was to conduct Boudhik Varg on Prarthana for the benefit of Swayamsevaks. All over the country, the programme was held, in all, at 20192 Shakhas in which 2 lakh 90 thousand 334 swayamsevaks participated. As a result of this programme, the efforts to develop speakers with excellent communi-cation skills were fruitful.

### **3. Prachar Vibhag (Media) :**

Seminars for columnists were arranged by Prachar Vibhag at Kolkata, Delhi, Bengaluru and Karnavati. Islamic issues and problems, Various trends prevailing in Scheduled Castes, Emerging scenario in Jammu-Kashmir and Perspective on development of Bharat were the four main subjects discussed in these seminars in which 220 columnists participated from all over the nation.

More and more young and educated people are coming to Sangh using 'Join RSS' feature on RSS website. An effort is going on to appoint Karyakartas at every level in the follow up of 'Join RSS' feature. 12,118 people came to Sangh via 'Join RSS' feature in the year 2012. In the year 2013, this number has reached to 31,102.

### **4. Pracharak Vibhag :**

This year three special meets were organised.

1. A meet of elderly Pracharaks, who have not been entrusted with any specific responsibility, was held at the "Smriti Bhavan", Reshimbag, Nagpur, on the auspicious occasion of Vijaya Dashami, from October 11 to 14. Out of an expected number of 124, 85 Pracharaks attended the meet. Common discussions were held on the subjects like Dharmajagaran, Gow-seva, Seva Vibhag and Parivar Prabodhan. Informal talks the participants had with the Param Poojaniya Sarsanghachalakji, Mananiya Sarkaryavahji and Sri. Ranga Hariji, were highly beneficial. All the participants also attended the Vijaya Dasami programme held at Nagpur. The Traditional programme of paying respects to elders by touching their feet and offering

them Shami leaves, was well received by all. Swayamsevakas of Nagpur even interviewed some of the elderly Pracharaks. Everyone was ecstatic about the immaculate planning and arrangements of the programme.

2. A meet of former Pracharaks, who are presently either Sanyasins or Mathadhipathis, was held at “Smriti Bhavan”, Reshimbag, Nagpur, from January 21 to 23, 2014. Out of 85 in the list, 48 Sanyasins attended the meet. Discussions on Social Harmony, Parivar Prabodhan, Dharmajagran, and Promotion and propagation of Sanskrit language, were held. And, taking into account the importance of the subjects, every participant in the meet committed himself to join the current process of social transformation by educating his own followers. A discussion with the Param Poojaniya Sarsanghachalakji was also held.
3. In the series of training program for Pracharaks of various categories, a camp for pracharaks working in various social fields was held at Muradnagar near Gaziabad on the occasion of Deepavali festival ( 2<sup>nd</sup> to 6<sup>th</sup> Nov. 2013). 483 pracharaks from 33 organisations were expected out of which 432 participated in the camp. Poojaniya Sarsanghchalakji, Man. Sarkaryavahji and many akhil bharatiya adhikaris were present and guided the camp. The fundamentals of pracharak life, his style and functioning, Hindutva and issues related with various social fields were covered in Boudhikas and discussions. A workshop on Triguna Sampada based on Bhagavad-Gita was conducted.

## **Special programmes held in various provinces**

1. **‘Sankalp Mahashivir’, Mahakaushal :** A Sankalp Shivir was organised in commemoration of the 150th birth

anniversary of Swami Vivekananda. In the Mahashivir (mega-camp) held in the first week of January 2014, apart from all Taluks and Nagars, 2505 Mandals out of 2079, were represented. Targets were so fixed to ensure representation from maximum places, and to motivate and activate every worker having a responsibility so as to bring into Sangh contact maximum number of youths as new workers. As a result, Swayamsevaks from 6066 villages, 713 Nagar Bastis (Total number of Nagar Bastis-724), from all Bastis of 138 Nagars, from all Mandals of 52 Taluks, and all villages of 24 mandals attended the Shivir". In all, 34688 Swayamsevaks attended the Shivir.

**An exhibition with "Hindutva : A view of life"** as its theme was organised and about 1 lakh people visited the exhibition.

As part of the preparatory work, 1191 Swayamsevaks came forward as Vistharaks. All over the province altogether more than 10 thousand Bhaitaks and around 8 thousand Ekatrikarans were conducted. 1 lakh 60 thousand households were contacted to extend invitation for the concluding programme. As a result, some 90 thousand Bandhus attended the programme. As part of the Shivir "Matrusakthi Sammelan", "Sant Samagam" and "Enlightened Citizens' Meet" were also held. The whole programme proved to be a great success from the point of view of expansion of the work.

## **2. College Students' Camp, Madhyabharath :**

A college student's camp to enlist participation of students from colleges in the Madhya Bharath Pranth was organised from January 31 to February 2, 2014. As a preparatory

measure, Ekatrikarans were conducted at 142 places in the Pranth. Out of 3317 Swayamsevaks listed, 2028 Swayamsevaks attended the camp. 832 Swayamsevaks, who were qualified to attend the camp, were given registration. The camp was attended by 545 Swayamsevaks from 85 places. As a result, there has been improvement in college students' work. 41 Swayamsevaks expressed their willingness to work as Vistaraks in future.

### **3. District-wise Ekatrikaran in Gujarat**

Keeping in mind the workers' camp scheduled to be held in January 2015, and the three-year work expansion plan, one-day district-wise Ekatrikarans were held in Gujarat Pranth during the period December 2013 and January 2014. 248 out of 252 Taluks and 1133 Mandals out of 1948 Mandals were represented in the Ekatrikarans. Out of 1214 Bastis of 116 Nagars in the Mahanagars, Swayamsevaks from 842 Bastis took part. In total, 26519 Swayamsevaks from 2386 places participated. As a result, from the point of view of expansion, there has been very encouraging growth in work.

### **4. Chattisgarh Pranth :**

#### **A. Vibhag-wise Sakha-team camp**

Last year, camp of Mukhyasikshak, Karyavah level workers was organised. As a follow up measure, in September 2013, Vibhag-wise camps of the workers of Sakha-teams were planned. 1362 Karyakarthis from 444 Sakhas attended the camp. And as a result, there was an increase in number of Sakhas having the Sakha-team, and the Sakha-teams were more active.

## **B. Khand-wise Bal Swayamsevak Camp**

This year 24 hour khand-wise camps for Bal Swayamsevaks were organised. Camps were held in 77 khands, in which 6591 Swayam-sevaks from 625 places participated. Both Sharirik and Boudhik competitions were arranged in the camps. 40% of the Bal Swayamsevaks who attended the camp were freshers.

## **C. Literature Sales-day**

So as to reach our literature to households, a plan was chalked out to arrange for sales of our literature at all district headquarters and Nagar centres simultaneously on the same day. In this campaign 1105 workers participated at 114 places. The campaign lasted only two hours and books worth around 1 lakh were sold. The campaign was really a thrilling experience.

## **D. Route March**

Giving stress to qualitative aspect, route marches were planned to take place at district headquarters within the time-frame of December 22 to 24. Route Marches were taken out at all district head quarters. 885 Ghosh players participated. After culmination of the route march, Boudhik Varg on Prarthana was also conducted.

## **E. Nav Chaitanya Shivar**

“Nav Chaitanya Shivar” was held in commemoration of Swami Vivekananda’s 150th birth anniversary, in which 1650 college students from 386 college participated. Director of “super-30” of Bihar, Sri Anandkumarji, was the chief Guest. The speciality of the Shivar was that 40% of

students were new-comers. Hope, the Shivar will provide impetus to college students' work.

## **5. Chithod Pranth :**

### **A. Virat Hindu Dharma Sammelan, Baswada :**

“Mangad Balidan Shatabdhi Samaroh Samithi” organised a virat Hindu Sammelan at Baswada in Chithod Pranth. The Sammelan, held with the august presence of Param Poojaniya Sarsanghachalak, was a great success from the point of showing Hindu might. The event, held with the active participation of some 150 Sants from the surrounding areas, and co-operation and support in different forms extended by the local people and their physical presence in it, was highly inspiring. Including 95382 men and 26129 women, 1 lakh, 21 thousand and 511 people from 302 Mandals and 2065 villages took part in the Sammelan. As a preparatory measure, Bhajan Mandalis were formed in 83 villages and 1124 Gram Sabhas were formed. As a follow up measure, Taluk-wise Sangh Parichay Vargs will be planned.

### **B. Vistharak Yojana :**

For the consolidation and expansion of the work, village Vistharak campaign was conducted from December 24 to 31, 2013. From the total 24 districts of the Pranth, Vistharaks went to different places. In all, 1856 Vistharaks went to 1651 places. Because of this campaign, this year there had been an increase in number of places as well as Sakhas. Apart from this, with the idea of village development, for the first time, couple Vistharak Yojana had

been planned and 51 couples had come forward to work as Vistharaks and had been working in villages. This had been a very exhilarating experience.

## **6. Hindu Sakthi Sangam, Jammu :**

In the wake of Param Poojaniya Sarsanghachalak's tour of Jammu, an Ekatrikaran of Tarun Swayamsevaks was organised in the name "Hindu Sakthi Sangham" in Jammu. From the entire Pranth 4454 Swayamsevaks from 738 places participated in the programme wearing prescribed uniform. Almost the same number of civilians of Jammu also had attended the function. Such a programme held at Jammu has certainly been instrumental in instilling self-confidence in the Hindus there. Even from the point of making the workers active, the programme was very fruitful.

## **7. Navbharat Yuva Sakthi Sangam, Tejpur :**

The three-day "Navbharat Yuva Sakthi Sangam" of Uttar Assam Pranth, was held at Tejpur from January 24 to 26, 2014. Entry to the Shivar was restricted to Swayamsevaks belonging to the age-group of 28 to 40. From 29 districts coming under Uttar Assam Pranth, which includes the Brahmaputra Valley, Nagaland and Mizoram, 2749 Swayamsevaks attended the Sangam. Param Poojaniya Sarsanghachalakji was present throughout. The Swayamsevaks, who attended the camp, activity participated in the Sharirik and Boudhik programmes held at the camp. On January 25, in the evening, after the route march, "Bharat Mata Ki Aarati," a programme by Sri Sathyanarayanji Mourya, was staged.

Special mention has to be made about the presence of Dr. Amarjyothi Chowdhiri, former Vice-Chancellor of the Central

University. An exhibition to introduce the Sangh was the cynosure of the Shivar. 8000 people of Tejpur visited the exhibition.

## **8. Full-time worker's and Pracharaks' Varg, Assam:**

The number of full-time workers engaged in different activities in the Assam Kshethra is sizeable. Including men and women, there are around 950 full-time workers in the Kshethra. The number of Sangh Pracharaks is 72. According to this year's working plan, it was decided to conduct a Special Varg of the Karyakarthis above the district level, and the Varg was held at Hojayi from February 11 to 14, 2014. Mananiya Sarkaryavah, Saha-Sarkaryavah, Sri Dineshchandraji, All India Organising Secretary of Viswa Hindu Parishad, Sri Krishnaprasadji, All India Vice President of Vanavasi Kalyan Ashram, and Susri Sunitatai of Rashtra Sevika Samithi were also present in the Varg. Karyakarthis had occasion to present their experiences and thoughts during different discussion sessions. In the inaugural function, Saha-Sarkaryavah Dr. Krishnagopalji gave the Margadarshan, and on another occasion Sri Dineshchandraji gave the Margadarshan. The concluding session was addressed by Mananiya Sarkaryavah. In one session of the Varg, female workers had an opportunity to freely interact with Susri Sunitatai Haldekar. An exhibition depicting the status of different organisations was also arranged in the Varg. Out of the expected number of 470 workers belonging to 19 organisations, 368 Workers belonging to 17 organisations attended the Varg.

## **9. Arogya Chetana Shivar, Guwahati :**

According to the plan of the Seva Vibhag, Sevabharati has been active for the last 20 years in the northeast region of

Purvanchal. Its activities are specially concentrated in the health sector. Medical facilities and services are not available in far-flung villages of northeastern states even today. Sevabharati has started the Health Protection Scheme there in an effective manner. Till date, training has been given to more than 5000 young men and women and many of these people are still active in serving the society there. A camp of all such workers was organised at Guwahati on November 7 and 8, 2013. 2500 such Arogya Rakshaks were registered in the camp. 877 women and 1066 men from 1648 villages also participated in the camp. Apart from guidance from medical experts and mutual exchange of experiences, the Shibirarthis had the benefit of guidance from Akhil Bharatiya Seva Pramukh, Suhasrao Hiremath, Organising Secretary of Aryogya Bharati Dr Ashokji Varshney, All India President of Rashtriya Seva Bharati Sri. Suryaprakashji Tonk and Mananiya Sarkaryavah Bhayyaji Joshi, etc.

Shobhayatra taken out on the occasion was a special attraction. Presence of Karyakarthis of the age-group of 18 to 35 was the speciality of the camp. Participants had met the travelling expenses from their own pockets. The camp will certainly provide a new energy to the Seva activities in the northeast region.

### **Tour of Param Pujaniya Sarsanghachalakji during 2013-14**

According to this year's tour plan, Param Poojaniya Sarsanghachalakji's tour was arranged Kshethra-wise. Along with organisational Baithaks, Ekatrikaran programmes of Swayamsevaks were also arranged. Apart from participating in special programmes, informal meetings with gentry of different places as part of the special Sampark Yojana, also took place.

Of the Programmes that need special mention, the Ekatrikaran of Swayamsevaks with full uniform, held at Maneri near Uttarkashi, was highly inspiring.

He had an interaction session with Scientists in Pune. There was yet another programme in which he met top ranking scientists in the country, in which 9 leading scientists participated.

During the Jammu tour, he had interaction with some retired Defence Officers, and had a meeting with leading Tamil litterateurs at Chennai.

For the last two or three years, discussions based on the Vijaya Dasami speech with elite people at Delhi have become a permanent feature. Especially retired Defence Personnel, retired Govt. Servants, media people, important office bearers of social organisations, educationists, economists etc. would attend this programme. This year also the programme was held at Delhi.

Discussions were held with Directors of different educational institutions at Indore, Professors of I.I.T. Pawai, in Mumbai, as also leading lights in the business and industrial sectors.

He had also met spiritual leaders, including Poojya Acharya Mahasramanji, Jainacharya Srimad Vijay Ratnasunder Surishwarji, Jain Munis Poojya Sri Vidyasagarji, Poojya Sri. Tarun Sagarji, Poojya Sri Pulak Sagarji, Kanchi Acharya Poojya Jagatguru Jayendra Saraswathiji Majaraj, Poojya Shivababaji, Poojya Dada J.P. Vasvaniji of Pune, and the Chief of the Radhaswami Satsang Sabha, which needs special mention.

He had also met well-known persons from different walks of life, among whom were noted music maestro P. Ajay Chakravarthi, leading foot ball player Subrato Roy, Retired Major

General K.K. Gangully, Retired Supreme Court Justice V.R. Krishna Iyer, Justice Ramalingam of Tamilnadu, and Maharaja of Sirohi Sri Raghuvir Singhji, Rajastan.

### **Tour of Mananiya Sarkaryavahji :**

This year according to Mananiya Sarkaryavahji's tour plan, his tour was arranged Kshetra-wise. Especially, interaction with Karyakartas of the Prath team, Samanwaya Team Baithaks and Baithaks of Pranth level Karyakartas of special activities, formed the main plank of the tour. In all Bhaitaks attendance was from 65 to 85 per cent. State-wise 'Vishesh Chintan' Bhaitaks also formed part of the tour. Evaluative assessment of the current social situation, challenges before the Hindu Society, anti-national and anti-social activities was made in the Bhaitaks. After the Chintan Bhaitak, thought was given to follow up measures to be taken. It is necessary that this process should take place at different levels. Attempts will be made to plan our activities in view of the Chintan.

### **National Scenario :**

During the year 2013-2014, two special programmes were conducted.

- 1. Swaranjali :** "Samskar Bharati", on the occasion of the 50<sup>th</sup> year of the Chinese aggression, renewed the memory of those who had attained martyrdom during the Chinese aggression of 1962, and paid rich tributes to them at the function, "Sarhad ko Swaranjali," organised by it. The song 'ye mere Vatan ke logon', that has enthralled and thrilled our masses ever since 1963, and the song "Kath Jonavar Mruthyuhol", written and tuned by late Bhupen Hazarika, were the main attraction of the function. Students from 8

northeastern states took part in the competitions held on the occasion. The 92 year old mother of martyr Shri Jasvantsingh Rawat, Smt. Leela Deviji had attended the function. The participation of our Scheduled-tribe Bandhus and some 1000 artistes from all over India, could give a glimpse of our unity to the society.

Plans have been made to reach soaked-soil collected from the birth places of martyrs and border villages, Rakshasutre (Protective-string) and a memento, signed by Susri Lata Mangeshkar, to the households of the martyrs.

- 2. Swami Vivekananda Sardha Shati Samaroh:** The participation of Vanavasis, villagers, matrushakti, youths and enlightened sections of our society in different programmes organised to commemorate the 150<sup>th</sup> birth anniversary of Swami Vivekanand, was something unprecedented.

Seminars and debates were organised on different subjects based on the thought of Swami Vivekananda for the sake of enlightened sections of our society, and at every level, the relevance of the Swamiji's thoughts even today, has been acknowledged.

Especially, Swamiji's message of "Man-making" has once again engaged our thoughts. Participation of Chancellors and Vice-Chancellors of different universities, educationists, retired judges, defence personnel, scientists and great personalities working in the Dharmic and social spheres, was highly inspiring. Co-operation extended by the Spiritual Organisation like Sri Ramakrishna Mission, Gayatri Parivar, Sharada Matham, Chinmaya Mission, Swaminaryan Order, Jain institutions, etc. has really enhanced the prestige of the programmes.

The Celebrations under the guidance of Poojya Mata Amruthanandamayi Devi and great personalities like Hon'ble Subhash Kashyap, presiding over it, from the point of view of thinking, studying, awakening and participation, will certainly prove to be instrumental in deciding the future course of our nation. The whole celebration was ably planned and carried out by the Vivekananda Kendra, Kanya Kumari.

### **Insecure national borders :**

Pakistan, Bangladesh, Nepal, Myanmar, Bhutan and Tibet (China) are our bordering countries, through a resolution passed at the last Akhil Bharatiya Karyakari Mandal, held in Kerala, we had invited the attention of the people and the government to the grave situation prevailing at our borders.

It is necessary to seriously think about reinforcing security at our borders by developing all needed infrastructure. The existing facilities are quite inadequate. Presently, there are no proper roads on our borders. Even at places where roads are available, the conditions of the roads are pathetically bad so that they are practically unfit for use. In the absence of proper road facilities and means of transportation, how the development of the region will be possible? The border villages in Ladhak and Arunachal Pradesh happen to be the most neglected and quite backward. In fact, the manpower in such villages should be properly streamlined and utilized, from the point of view of security. However, neither the State government nor the Central government seems to be concerned about it. Our borders are well defined and demarcated. But our neighboring countries are trying to create an impression that the borders are disputed. So, we should not only counter their arguments in definite and unequivocal terms, but also think of measures to get them vacated from our areas, forcibly encroached on by them.

In our resolution, we have put forward a suggestion that a Border Commission or Authority be formed so that it will be easy to take necessary steps to ensure proper security and facilitate development of the region by achieving proper coordination between the people living in that area, the Central defence forces, and the State Government. In the absence of a proper system, narcotics, illicit arms and counterfeit currency notes are being smuggled into our country. And also infiltration by aliens is taking place on a large scale. Now there is urgent need for transportation facilities, travel facilities and electricity in sufficient quantity, in the border regions. Migration of Youths from border regions for want of work, livelihood and education facilities, is a matter of grave concern. The Central government has to give serious thought to this problem and prepare and execute necessary plans to address it.

### **Challenges confronting the Hindu way of life :**

Last year, two issues had come up for discussion before the society - “live in relationship” and “homosexuality - which led to arguments, both in favor and against, on according legal sanction to such relationships.

Bharat is known all over the world for its distinct life-style, culture, traditions and value system. A highly cultured life-pattern based on certain life-values and moral-values had developed here through thousands of years. The “institution of marriage” is our speciality. Without breaching the limits of family, social and Dharmic conventions, our social life has been secure. Social commitment is more efficacious than the legal commitment.

How can we compromise on our moral values, social system and traditions in the name of individual freedom? So, before extending legality to such things, we have to keep in mind the

long-time deleterious effect it will have on our social life. Our society has always cared to reform itself in keeping with the times, in the light of our “Sruthi” and “Smritis”. Law accords security to the individual. However, a society that goes by its traditions, conventions, culture and life-values, cannot be secured through law. Only guidance based on Dharmic and social thought can ensure security to social life.

## **National Unity**

Certain incidents, having the potential to vitiate the atmosphere of unity and harmony prevailing in our country, that took place during the 2013-2014 period, have been very painful.

Different religions, modes of worship and beliefs, which have taken birth in this very soil, have been growing here as different branches of the same spiritual thought, with a sense of unity for thousands of years. However, in recent years, to serve some temporary, selfish political interests, attempts are being made to divide our society in the name of majority and minority. It is the reflection of the same mindset that we see in the proclamation according minority status to the Jain community. It is high time for the thinkers active in the social and Dharmic spheres to come together and evolve the ways and means to safeguard the unity and integrity of the nation.

Discussions on bifurcating big states are being held from time-to-time. reorganization of states, if required, is necessary and proper. However it is unfortunate that, even in such matters, considerations of political gains and losses influence the decision-making process. Decisions should be taken with the consideration and protection of social relationships and mutual confidence. At the time of bifurcation, care should be taken against whipping up passions, and to ensure that people of any

section or region do not get the feeling that injustice has been done to them. Otherwise, the possibility of such decisions affecting social relationships in the long run will remain.

In the near future, Lok Sabha elections will be held. This is a good opportunity for our countrymen. The credibility, honesty and commitment to the nation of the present government have become questionable. Today, the nation expects a change. It is the active role of the enlightened voters that is going to shape the future destiny of our nation. So, it is for us to play our role assessing its implication correctly, so as to bring about the change that will reflect the will and aspirations of the common people.

## **Conclusion :**

Now it is our experience that throughout the nation, regard for and expectations from our work have increased much. And, so as to increase our efficiency to meet the expectations, we have to work hard with full concentration. From the last two years we have been making good planning to develop our work, with positive results.

If we do the Sangh work with dedication, wisdom and dexterity, we will certainly be able to enjoy the bliss of accomplishing our goal. Let us remember Param Poojaniya Shri Gurji's words. He used to say: "Less talk, more work." Let us make a resolve to follow this advice. Our efforts and planning, I am sure, will certainly lead to the proclamation of the success of the Sangh.

\* \* \*